विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 18 जुलाई 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्यारे बच्चों आज मैं जो पढ़ाने जा रहा हूँ वह मुख्य एवं स्मरणीय तथ्य है।

(अभ्यास करने के लिए)

ध्यान दें।

- एक धातु के अनेकार्थ हो सकते है; यथा – √नम् इत्यादि।
- कुछ धातु के प्रत्यय के साथ जुड़ने पर 'इ' का आगम हो जाता है।
- लृट् लकार में मूल धातु का रूप प्रायः लट् लकार से अलग हो जाता है।
- एक ही अर्थ के लिए भी अनेक धातु हो सकते हैं। यथा – खेलना के लिए √क्रिड्, √खेल इत्यादि।
- द्विवचन के तीनों पद् लृट् लकार में विसर्ग हे होता हैं।
- एकवचन के तीनों धातु रूपों में हस्व स्वर इ की मात्र लगती हैं।
- ध्यान रखें कि शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध उच्चारण अत्यावश्यक है।

स्मरणीय

1. क्रिया का मूल रूप ही धातु कहलाता है।
2. संस्कृत में तीन वचन होता है – एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।
3. मूल धातु के प्रत्यय जुड़ने पर क्रिया रूप बनते हैं
4. लकार 10 होते हैं। पर प्रमुख पांच ही पाठ्यक्रम में है।
5. लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के किया जाता है।
6. लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए किया जाता है।
7. कुछ धातुओं के लट् लकार मूल धातु के अनुसार तथा कुछ धातुओं के लट् लकार में भी परिवर्तन हो जाता है

   उदाहरणार्थ – √गम् = गच्छति, √दृश् = पश्यति इन्हें अलग से स्मरण कर लेने चाहिए।